(God: Personal or Impersonal?)

क्या परमेश्वर व्यतिगत रूप से सही समझा जाता है या फिर अव्यक्तिगत रूप से? हिन्दू धर्म सदियों से इस सवाल पर बहस कर रहा है. एक मायने में यह एक कृन्निम सवाल है क्योंकि जो एक सामान्य समझ को प्राथमिकता देते है वे यह इंकार नहीं करते की खुद परमेश्वर अपने आप को व्यक्तिगत विशेषताओ से व्यक्त करते है और जो व्यक्तित्व को ज्यादा महत्व देते है वे यह इनकार नहीं करते की परमेश्वर के गुण साधारण मानवता से बढकर है. अब यह सवाल उनमे से एक - या कोई और का नहीं है , परंत्हू यह सवाल है प्रधानता का.

अगर हम हिन्दू धर्म के इतिहास को देखे, पूर्व वैदिक काल ने परमेश्वर के व्यक्तिगत दर्शन पर बल दिया है. इन्द्र के नेतृत्व में ३३ वैदिक देवता, स्वर्ग के राजा सभी स्वाभाव से व्यक्तिगत रहे है. यह तब तक मुमकिन नहीं हुआ जब तक की व्यक्तिगत से भी उप्पर उठ कर ब्रह्मंदिया अध्यात्मिक वास्तविकता के विचार को उपानिषदों ने मनाया.

अब जैसा की उप्पर कहा गया है , वेदांत ने अचानक से ही व्यक्तिगतता की महत्व की दृष्टी को युही ख़त्म नहीं कर दिया . जैसे संतो ने ब्राह्मण को श्रद्धांजलि अर्पित की , वे यह नहीं भूले की ब्राह्मण अपने आप को वस्थाविकता में प्रकट करता है , बेशक देवता सहित . ब्राह्मण मानव की सभी धारणाये से परे है , यह अनंत , अपरिवार्थानीय और सभी स्थानिक स्थानीयकरण से परे है . और अभी तक यह उन विशेषताओ में से कोई भी नहीं है . उपानिषदों ने जानकारी के साथ इस धारणा का उपयोग किया है की यह एक ही ब्रह्मा है , जो सभी विचार और प्रतिबंधों से उप्पर है , और मानव आत्मा के गहरे कोर के समान है . “तट त्वम असी ” नारा है , परमेश्वर आपसे बाहर कोई अलग जीव नहीं है , बल्कि परमेश्वर अपने सबसे अधिक वास्तविकता में आपके भीतर है .

यह आसान है , शायद ज्यादा ही आसान हैं , अपने गुरु शंकारा के सुविधाजनक मोर्चे से उपानिषद का व्याख्या करना , जो अपनी रचना के बाद एक सदी से भी अधिक जीवित थे . लेकिन शंकारा हमारे लिए ब्रह्मा - आत्मा समझ से प्रभावित, मनुष्य धर्मपरायणता का एक महान उदाहारण प्रदान करते है . भगवान् , शंकारा के लिए कभी भी केवल अमूर्त नहीं है ; या इश्वर के रूप, या व्यक्तिगत सृष्टिकर्ता , या उसकी आत्मा की गहरी कोर , शंकारा स्वयं को ब्राह्मण को समर्पण करता है , सर्वोच्छ वास्तविकता और अवशोषित भक्ति में .

भगवान् का यह वेदान्तिक समझ , हिन्दू धर्म में एक स्थायी उपस्थिति बनाये रखा है . आज रामकृष्ण जैसे समूह खुद को इस अवधारणा पर आधारित किये हुए है . लेकिन

हमेशा प्रावधान है की उच्छ भगवान् खुद को व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों में प्रकट करते है. वास्तव में यह शायद कुछ ज्यादा न होगा अगर हम कहे की, कुल मिलकर जब शिक्षित लोग हिन्दू धर्म के बारें में सोंचते है, देवपूजा वेदांत उनके मन में पहले आता है.

फिर भी हिन्दू धर्म का एक और पहलु भी है. शंकारा ने उस दौरान यह लिखा था, जब भक्ति धर्मपरायणता लोकप्रिय हुआ था. शंकारा का लगभग समकालीन रामानुज था, जो भगवान् के व्यक्तित्व के विचार से आगे निकल गया था.. रामानुज ने उस वैष्णवी पाठशाला से पहचान प्राप्त की जो विष्णु की उपासना करता था, जबकि शिव भक्त भगवान् के सर्वोच्छ रूप में शिव को मान्यता देते रहे. कई हिन्दुओ के लिए यह दो देवताये भगवान् का स्वरुप है (उनके समबन्धित भाषाओ में). एक व्यक्ति के अनुसार भगवान् सिर्फ एक इंसान के रूप में ही नहीं देखा जाता, लेकिन एक सर्वोच्छ रूप में, फिर भी जिसका सार एक व्यक्ति के गुणों से सम्पूर्ण होता है.

एक जाना माना हिन्दू समाज यह मानता है की भगवान् व्यक्तिगत रूप में इस्कान है, कृष्ण विश्वास का एक अंतराष्ट्रिया समाज जो की 'हरे कृष्ण' नाम से जाना जाता है. जब इस समूह का १९७० में संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे बड़ी लोकप्रियता का समय था, कुछ लोगों को एहसास हुआ की यह एक निर्मित समकालीन पंथ नहीं है. लेकिन हिन्दू धर्म का एक प्रमाणिक रूप सोलाव्ही सदी तक कम से कम कातान्य तक पहुँच रहा था. संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में आने के कई समय पूर्व, ए. सी भक्तिवेदंता ने 'बेक टू गोड हेड इन इंडिया' पत्रिका को प्रकाशित किया, और पत्रिका में केंद्रीय सन्देश था की, 'देवत्व' कृष्ण के अलावा अन्य कोई नहीं, वे 'निजी देवत्व का सर्वोच्छ रूप' करके उन्हें घोषित किया. वास्तव में प्रभुपदा को अवैयक्तिक, वेदांत की धारणाये, के मामले में बहुत थोडा धैर्य था जिन्हें वो गलत मानता था.

तो सही कौन है? भगवान् मुख्य रूप से व्यक्तिगत है या अवैयक्तिक? यहाँ कुछ विचार है जो हमारी मदद कर सकेंगे.

1. यह गलत होगा अगर हम व्यक्तित्व के विचार से भगवान् को एक सीमा में बाँध ले. यह विवाद अधिक मायने में सामान्य आधार पर आधारित है, की यह एक गलत धारणा होगी जो की भगवान् को किसी भी विशेषता में सीमित कर दे. नहीं, सही सोंचने वाला व्यक्ति को इनकार करना चाहिए, क्यूंकि भगवान् अपने सार में मानव के विचार और भाषा से पार है. ज़ाहिर है, वो ही, भगवान् अनंत है. लेकिन यह प्रतीति भगवान् को कम नहीं कर देती. इसका मतलब है की सारे

गुण जो भगवान् में है , वह एक असीमित क्षमता में है . तो , जब हम कहते है की भगवान् शक्तिशाली हैं , हम जानते है की हमारा शब्द 'शक्तिशाली ' हमारे मानवता के सीमित वातावरण से निकला है . लेकिन हमें पता है की हमारी अवधारणा हमारी सीमओं के बिना भगवान् पर लागू होता है . इसी तरह अगर हम कहते है की , हमारा भगवान् प्यार करने वाला है , हम जानते है की भगवान् का प्यार हमारे प्यार के विचार के भी पार है . और फिर भी हम जानते है की , कम से कम इन मामलों में जब हम इन गुणों को लागू करते है , - शक्ति या प्यार - भगवान् को हमारी कल्पना से बहुत अधिक दर्शाता है.

इसी तरह जब कोई कहता है की भगवान् व्यक्तिगत है , वो भगवान् को कुछ अर्पित कर रहा है , जो हम अपने सीमित सन्दर्भ में सीखते है , लेकिन जो भगवान् के पास अत्यधिक मात्रा में है , वो हम सिर्फ कल्पना कर सकते है . इसके अलावा , भगवान् यदि अपने सार में व्यक्तिगत है , तो वह मूल में भी अवैयक्तिक नहीं हो सकता यह शास्त्रीय दार्शनिक सन्दर्भ में , इस समानता का सिद्धांत है . जब हम एक विचार के लिए एक सादृश्य देते है , हम एक छवि प्रदान करते है की दोनों ही इस विचार के सामान और भिन्न है . तो परमात्मा की व्यक्तिव और मानव की व्यक्तित्व एक सामान है और भिन्न भी है जिसमे भगवान् व्यक्तिगत है , लेकिन यह भिन्न भी है की भगवान् सर्वोच्छ रूप में व्यक्तिगत है , जैसे वो सर्वोच्छ विशेषताओ से संपन्न है .

2. मनुष्य द्वारा भगवान् के प्राचीन धारणाये निजी देवता के थे . धर्म की उत्पत्ति का सवाल उतना लोकप्रिय आज नहीं है जितना की यह सौ साल पहले हुआ करता था. एक समय था जब विद्वानों को एक विकासवादी दृष्टिकोण पर सहमती थी , जहाँ एक साथ कई आत्माओ की पूजा और जादूगरी का अभ्यास मानव धर्म के आरम्भ के बहुत निकट था . बहरहाल यह दृष्टिकोण , मानव वैज्ञानिक और धर्म के इतिहासकारों के अनुसंधान में टिक न सका . जेर्मन लेखक विल्हेम शमित विविध मानव वैज्ञानिको के रिकार्डो को एक साथ लेकर निम्नलिखित निष्कर्ष तक पहुंचे ..
    a. दुनिया में सबसे कम विकसित लोग – विशिष्ट जाती , ऑस्ट्रलियाई आदिवासी , उत्तरी कैलिफोर्निया के भारतीय इत्यादि – मूल धर्म के सबसे कम दूषित किस्मो को दर्शाता है .
    b. इन संस्कृतियों में हम एक ही परमेश्वर की मान्यता को पूर्ण रीति से और जादू या अन्य रस्मो के अपेक्षाकृत छोटी राशि को पहचानते हैं .

c. मूल भगवान् की पूजा की याद अभी भी कई और विकसित धर्मो के इतिहास में किया जाता है . उदहारण ज़ूस , बृहस्पति , यूरोपें संस्कृतियों में तिउ या द्यौस पिटर , सामी संस्कृति में अल , और चीन में शान्ग्दी.

इस प्रकार यदि हम बीसवी सदी के पहले आधे में किया गया अनुसंधान के निष्कर्ष पर आधारित हो , (शमित द्वारा विश्लेषित संस्कृतिया आत्मसात है) यह एक अच्छा कारण है , विशवास करने के लिए की धर्म की उत्पत्ति भगवान् के एकेश्वर्वादित्व समझ से उत्पन्न हुई . हमारे प्रयोजनों के लिए , इस निष्कर्ष का सबसे महत्वपूर्ण पहलु है की परमेश्वर इन प्राचीन संस्कृतियों में समान रूप से व्यक्तिगत है . तथ्य यह हैं की इन सारी घटनाओं में, लोग विशवास करते हैं की परमेश्वर में सारी विशेषताए हैं जिनका अन्य संदर्भो में उल्लेख किया गया है अर्थात उन्हें अनंतकालीन , सर्वशक्तिमान और न बदलने वाले परमेश्वर के रूप में देखा गया है . और उनसब में उनका व्यक्तित्व भी दर्शाया गया हैं .

3. परमेश्वर खुद परमेश्वर नहीं होते अगर उनके अन्दर यह सारे गुण नहीं होते . ऐसे परमेश्वर की उपासना करने का कोई अर्थ नहीं जहाँ परमेश्वर का मूल उसकी सृष्टि से कम हो . यह सुनिश्चित हैं की परमेश्वर में वो सारे गुण होना आवश्यक नहीं जो उनके सृष्टि में हो . वो न हरा हैं , न छोटा और न ही एक नामी घुड़सवार . यह गुण सकारात्मक नहीं हैं , वे अच्छे हैं या नहीं परिस्थितियों पर निर्भर करता हैं . हरा होना मेढक के लिए अच्छा होता हैं दांतों के लिए नहीं , छोटा होना घुड़सवारों का गुण हैं , लेकिन जिराफ के लिए एक कमी हैं , और एक अच्छा घुड़सवार घुड़सवारी करने की आवश्यकता पर निर्भर करते हुए अच्छा , बुरा या उदासीन भी हो सकता हैं . लेकिन कुछ ऐसे भी गुण हैं , जिनको हम आतंरिक रूप से अच्छा सोंचते हैं , जैसे सौंदर्य , शक्ति या ज्ञान . एक जीव में स्वाभाविक रूप से इन गुणों द्वारा सुधार होता हैं .

निश्चित रूप से व्यक्तित्व को भी हमे महत्व देना चाहिए . व्यक्तित्व हमे निर्जीव वस्तुए जैसे चट्टान या कंप्यूटर से भिन्न करता हैं . आजकल लोग अक्सर यह चर्चा करते हैं की क्या पशु भी मनुष्य हैं इंसानों के जैसे , क्यूंकि वे समझते हैं इस गुण की वृद्धि की आवश्यकता को . एक व्यक्ति होने के लिए सम्मान और अधिकार का होना आवश्यक हैं . लेकिन जैसे भगवान् के पास सभी सर्वोच्छ गुण हैं , वैसे ही उनका व्यक्तित्व होना भी आवश्यक हैं (जो हमने कहाँ उन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए अर्थात यह की इस विशेषता के साथ भी भगवान् का व्यक्तित्व हर प्राणी के तुलना में अधिक हैं).

इसी विचार का समर्थन करने का एक और रास्ता हैं दर्शाना की कोई भी आतंरिक रूप के सकारात्मक गुण पहले इस ब्रह्माण को बनाने वाले का होना आवश्यक हैं .

4. भगवान् के कार्यों के द्वारा मालूम होता हैं की वे व्यक्तिगत हैं . अंतत कोई इंसान भगवान् को जानने के योग्य से अधिक नहीं जान सकता ना वर्णन करने से अधिक बयान कर सकता हैं . हम भगवान् के बारें में बोलने और जानने का एक प्राथमिक तरीका है उनका विश्लेषण करना , की हम उनसे कैसे समन्धित हैं , और वे हमसे कैसे , केवल कयासबाजी पर निर्भर के बजाये . इस सन्दर्भ में ध्यान देने वाला विषय यह है की , लोगों के मन में भगवान् की समझ कहानियों पर आधारित होता हैं न की अमूर्त विचार विमर्श पर . अथार्त, हिन्दू धर्म में बहुत से भक्त , महाकाव्यों और पुरानो की कथाओं की जानकारी रखते हैं , लेकिन थोडा (अगर कोई है तो) जानकारी अपने उपानिषद के सन्देश पर. कहीं और से भी ज्यादा , इन कथाओं में हमे पता चलता हैं की भगवान् व्यक्तिगत हैं और उसकी अपनी सृष्टि के साथ सम्बन्ध हैं . और जब कथाये ऐतिहासिक पहचान के साथ आती हैं , वे और भी विश्वासनीय हो जाते हैं . दुनिया के सारे धार्मिक ग्रंथों में ऐतिहासिक विश्वासनीयता में बाइबल का प्रमुख स्थान हैं .

निर्जीव वस्तुओ से एक व्यक्ति भिन्न कैसे हैं? बेशक कई स्वभाव होंगे: सावधान रहना, बुद्धि, साथी के रूप में अन्य लोगों के बारें में जागरुकता और कई अन्य. लेकिन यहाँ एक ख़ास विशेषता हैं जो की शायद एक व्यक्तित्व का सबसे शक्तिशाली अभिव्यक्ति हैं , अर्थात किसी और के लिए अपने लाभ को छोड़ने की इच्छा . जब कोई अपने धन , स्वास्थ , या यहाँ तक की अपने जीवन का बलिदान दे , वो एक वास्तविक व्यक्ति होने का उच्छतम स्तर पहुँच गया हैं, और खुद को औरों से स्पष्ट रीति से अलग करता हैं .

इस प्रकार जब हम कहते हैं की भगवान् व्यक्तिगत हैं , भिन्न भिन्न स्तर पर हम अपनी धारणा को निर्धारित करते हैं. भगवान् अब तक व्यक्तिगत रूप से खुद को प्रकट करता हैं , हमारी प्राथना सुनता हैं , हमारी अगुवाही करता हैं और हमे उद्धार प्रदान करता हैं . परन्तु क्या परमेश्वर अपने सर्वोच्छ प्रेम और बलि को भी व्यक्तिगत रूप से प्रकट करता हैं ? जब हम विभिन्न धर्म के देवताओं के चित्र को देखते हैं , हम समझते हैं की भगवान् सब अच्छा करता हैं , लोगों की सहायता करता हैं , उनको समय समय पर प्रेम करता हैं , परन्तु त्याग के प्रेम से अधिक इच्छा के प्रेम से प्रेम करता हैं . यह परमेश्वर की योजना में हैं , जैसा की हमे बाइबल के नये नियम में उपलब्ध किया गया हैं , जहाँ हम व्यक्तित्व

के सर्वोच्छ संकेत को पा सके , क्यूंकि यहाँ पर हम ऐसे परमेश्वर को पाते हैं , जो अपने ही पुत्र को मानव जाती के उद्धार के लिए क्रूस पर बलि चढ़ाया .

क्या परमेश्वर प्राथमिक रूप से व्यक्तिगत हैं या अवैयक्तिक ? परमेश्वर के कार्य , शक की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ते की वो ही सर्वोच्छ हैं .